International Journal ofApplied Research 2016; 2(7): 195-196

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(6): 195-196
www.allresearchjournal.com
Received: 25-05-2016
Accepted: 26-06-2016

कांता रानी
गांव बप्प जिला सिरसा हरियाणा, भारत।

Correspondence
कांता रानी
गांव बप्प जिला सिरसा हरियाणा, भारत।

मनोज सोनकर कृत 'गजल गजर' में व्यंग्य के मूल तत्त्व

कांता रानी

प्रस्तावना

वर्तमान युग घौर अराजकता, अन्याय तथा भ्रष्टाचार का युग है। आज ईमानदार व्यक्ति का जीना कठिन है। भ्रष्टाचार का कुछ सीमा तक उत्तरदायी लचीली न्याय प्रणाली भी है। प्रशासक अपने अनुसार अपनी सुविधा के लिए नियमों को तोड़ते हैं। प्रशासक की इस कुप्रथा से आज हमारे समाज में अराजकता, असन्तोष, कुंठा फैली हुई है। कवि ने 'बिल्डरों' पर कटाक्ष करते हुए लिखा है–

'बिल्डर तो राजा हुए, करें शहर पर राज।
साजिस गहराते हुए, चले छीनते हास।' [1]

भारतीय प्रशासन अपने कर्तव्य, नैतिकता, आदर्शों से गिर गया है। सत्ता के लाभ में जनता का शोषण करना, समाज में हिंसा फैलाना, जनता के धन का दुरूपयोग करना, दलबन्दी, निरंकुशता का वातावरण उत्पन्न करना उनके दोष हैं। व्यापारी, अधिकारी, राजनेता और न्याय व्यवस्था के लचिलेपन से ही भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। उन्हीं की कृपा से देश में चोर–बाजारी तस्करी, काले धन को प्रश्रय मिलता है। पुलिस व्यवस्था तो हमारी सुरक्षा के लिए स्थापित की गई है। लेकिन पुलिस स्वयं आतंकित है, गुण्डों से। गुण्डों के सामने वह निरीह, बेजार व असहाय दिखाई देती है। चारों ओर इन्हीं का बोलबाला है। भ्रष्टाचार का। कवि ने निरंकुशता पर कटाक्ष करते हुए लिखा है–

'रिश्वत तो बपौती
बहादुर वीर अड़े
गुनाह चढ़े सीढ़ी
कानून बहुत कड़े।' [2]

आज के युग में प्रत्येक क्षेत्र में भ्रष्टाचार पनप रहा है। भ्रष्टाचार दफतरों में इतना बढ़ चुका है कि गरीब आदमी की चक्कर काट–काटकर सारी उम्र निकल जाती है। लेकिन काम नहीं होता। काम होता है तो सिर्फ पैसे वालों का गरीबों पर कोई दया नहीं करता। अमीर वर्ग उनको अपने पैरों तले रौंदते हैं। कवि ने भ्रष्टाचार फैलाने वालों को निरकुंष सांड की संबा देते हुए इनसे सचेत रहने की प्रेरणा दी है।

''सांड बहुत पाजी हुए, चले रौंदते खेत।
लोग बाग चीखा करें, हाकिम खेले तास''। [3]

अगर ध्यान पूर्वक देखा जाए तो अपराध जगत भी पैसे के आधार पर फलता है। इसे बढ़ावा देने वाले होते हैं हमारे बड़े–बड़े मंत्री, रणनीतिज्ञ, व्यापारी जिन्हें अधिक पैसे की हवस होती है। ये निरंतर जनता को लूटते रहते हैं। मनोज सोनकर जी कृत 'गज़ल गज़र' में धार्मिक आस्था, समाज, मनौतियां अंधविश्वास, जाति व्यवस्था में धार्मिक महत्व जैसे बिन्दु को भी व्यक्त किया गया है। धर्म हमारी आत्मा है, व्यक्तित्व है, संस्कार है, जो हमारी परम्परा को उजागर करता है। धर्म के लिए एक श्रेष्ठ संकल्प चाहिए। आज उसी श्रेष्ठ संकल्प का अभाव है। भारत धर्म निरपेक्ष राज्य होने के कारक प्रत्येक धर्म का सम्मान किया जाता है। कवि ने धर्म पर व्यंग्य करते हुए लिखा है–

'शबरी तो चीखा करे, सुने नहीं हैं राम।
डेरा उसका तल रहा, साबित बचे न चाम।'[4]

लेकिन अपवाद हर चीज का होता है। एक और तो हम चांद को छू रहे हैं, तो इसकी और धार्मिक अंधविश्वासी व रूढ़ियों में जकड़े हुए हैं। यह धार्मिक संकीर्णता भारतीय समाज को धर्म की बजाए अधर्म के रास्ते पर ले जाती है। आज पाखण्डियों ने धर्म की भावना को कर्मकाण्डों में उलझा दिया है। जिसके कारण धर्म का उद्देश्य मानव–कल्याण न होकर जनता का शोषण हो गया है। धर्म केवल लाभ का सौदा बनकर रह गया है। जनता की विवशता को कवि ने इस प्रकार चित्रित किया है– ''धर्मराज रोएं बहुत, धर्म हुआ व्यापार, आग कही कुरसी कही, लोग बड़े लाचार।'' आज हम देख रहे हैं कि धर्म के नाम पर झूठ, विश्वासघात, आडम्बर, पाखण्ड आदि खुलकर पनप रहे हैं।

समुदायों ने आपसी रंजिश का आधार धर्म के बिना लिया है। यही धर्म दंगों का रूप धारण कर लेती है। उच्च जाति की अत्यधिक महत्ता और कट्टरता के कारण समाज अपने कार्यों की पूर्ति हेतु तंत्र–मंत्र जैसी साधनाओं की चपेट में आ गया। लोग जादू–टोने, तंत्र–मंत्र और ओझे सयानों में विश्वास करने लगे। सभी सम्प्रदायों में तान्त्रिक सृष्टि तत्व, तान्त्रिक यन्त्र विधान, तान्त्रिक मंत्र साधना तथा हठयोगी साधना आदि का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर होने लगा।, 'धर्म हुआ व्यापार' कहकर कवि ने चिंता जताई है–

'धार्मराज रोए बहुत, धर्म हुआ व्यापार।
आग कहीं कुर्सी कहीं, लोग बड़े लाचार।' [5]

हिन्दु धार्म में अपने–अपने कार्यों और इच्छाओं की पूर्ति के लिए मनौतियां मांगने की प्रथा का भी प्रचलन है। भारतीय समाज गरीबी व निरक्षरता के कारण भिन्न–भिन्न प्रकार के अंधविश्वासों से जुड़ा हुआ है। कोई भी दुःख दर्द, आर्थिक संकट आने पर लोग इनका समाधान करने के लिए पीर–फकीर, ओझे, पंडितों, मौलवियों के पास दौड़े जाते हैं। गरीब लोग पैसों के तंगी के कारण अपा इलाज करवाने हकीम, साधु, ज्योतिषी, सन्यासियों, ढोगियों के चक्कर में पड़ जाते हैं। वह उनके धन के साथ–साथ तन का भी शोषण करते हैं। भारतीय समाज में जातिगत कट्टरता बहुत अधिक है। जातिवाद की घोर समस्या है। धर्म की सतही निराशा ही नारेबाजी से ग्रस्त होकर रह गई है। समाज विचार और मूल्यों को अपनाने से डरता है। वह रूढ़ियों को सिसकते हुए ढो रहा है।

निश्कर्श

''गज़ल गज़र'' में रीति रिवाज और परम्पराओं, त्यौहारों, पाश्चात्य संस्कृति से आकर्षक व प्रवासी भारतीयों द्वारा भारतीय संस्कृति से लगाव का विवेचन किया गया है। लोक गीतों में हमारी संस्कृति बसती, गाती, नाचती है। लेकिन वर्तमान युग में ये परिवर्तित हो गया है। सभ्यता के साथ ही हमारी संस्कृति में भी बहुत परिवर्तन आ गये हैं।

'कान्हा तो दीखे नहीं, लागे बिदुर उदास' और 'गिनती की माया बड़ी, नचे नचाती नाच' में सांस्कृतिक चेतना की सांकेतिक शिक्षा दी गई है–

''कान्हा तो दीखे नहीं, लागे बिदुर उदास,
साग पड़ा सूख करे, उपजे उसम, बास।
गिनती की माया बड़ी, नचे नचाती नाच,
जोड़ तोड़ जारी रखे, तोड़ धारे न आस।'' [6]

देश की लोक संस्कृति में मेले और त्यौहार इतने रचे बसे हैं, कि समय–समय पर शहरों और गांवों में मेले और पर्व जुड़ते रहते हैं। लेकिन इतना सब कुछ होते हुए भी त्यौहार अब त्यौहार नहीं रह गये थे केवल लकीर की फकीर बनकर रह गये थे। आज पैसे के आगे वह रिश्ते कच्चे धागे की डोरी महत्वहीन होकर रह गई हैं। आज समाज का हर पहलू पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित है। धार्मिक कार्यों ने भी पाश्चात्य प्रभाव पीछे नहीं है। लेकिन यहां संस्कृति का नहीं अपसंस्कृति का ही विस्तार हो रहा है। लोग इस की चकाचौंध में फंस गये हैं।

निश्कर्शः

मनोज सोनकर जी ने विघटित होते नैतिक मूल्यों पर चिंता व्यक्त की है। समाज में मिटती संवेदनाएं, सन्यास बनाम भोग खोखले रिश्ते, यौन विकृतिया, विकृत–मानसिकता, पश्चिम सभ्यता के प्रभाव से प्रभावित संबंधों की अस्थिरता आदि का विवेचन किया है। आज मानव अनैतिकता की ओर ललायित हो रहा है। टी.वी., इलैक्ट्रॉनिक मीडिया तथा प्रौद्योगिकी के तोड़ने–मरोड़ने का बीड़ा उठा लिया है। राजनीति को तो पहले ही स्वार्थ का अखाड़ा माना जाता है। आज हम भौतिक सुख–साधनों की होड़ में सब कुछ भूल गये हैं। चारों ओर बेईमानी, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी का बोलबाला है।

संदर्भ सूची

1. मनोज सोनकर 'गजल–गजर' पृ0 55
2. मनोज सोनकर 'गजल–गजर' पृ0 50
3. मनोज सोनकर 'गजल–गजर' पृ0 76
4. मनोज सोनकर 'गजल–गजर' पृ0 31
5. मनोज सोनकर 'गजल–गजर' पृ0 34
6. मनोज सोनकर 'गजल–गजर' पृ0 61